2022-2023

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य में मानव मूल्य

डॉ॰ ओकेन्द्र

डॉ॰ बालक राम भद्री

डॉ॰ शांति विश्वनाथन

STN

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

N.S.S. COLLEGE PANDALAM

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:40 +05'30'

Sanal Kumar M G

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

भारतीय संस्कृति
एवं
साहित्य में मानव मूल्य

सम्पादक

डॉ० ओकेन्द्र

डॉ० बालक राम भद्री

डॉ० शांति विश्वनाथन

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
बी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

STN
Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

N.S.S. COLLEGE PANDALAM

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

Scanned with CamScanner

Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN,
o=Personal,
email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:40 +05'30'
Sanal Kumar M G

Scanned with CamScanner

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

भारतीय संस्कृति एवं साहित्य में मानव मूल्य

सम्पादक

डॉ॰ ओकेन्द्र

डॉ॰ बालक राम भद्री

डॉ॰ शांति विश्वनाथन

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

दूसरा संशोधित संस्करण : २०२३

ISBN 978-93-5811-037-1

प्रकाशक

जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स

वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३

दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३

E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ६६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : तरूण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Bhartiye Sanskriti evam Manav Mulay Edited by

Dr. Okendra, Dr. Balak Ram Bhadri, Dr. Shanti Vishvanathan

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

N.S.S. COLLEGE PANDALAM

Scanned with CamScanner

Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:40 +05'30'

Sanal Kumar M G

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

भूमिका : भारतीय सांस्कृतिक परम्परा और साहित्य में लोक कल्याण ५

१. मुदुमोलिकांचि में प्रतिपादित जीवन मूल्य १५
डॉ० शांति विश्वनाथन

२. हिन्दी साहित्य में मानव मूल्यों की अभिव्यक्ति २५
डॉ० बी. आर. भद्री

३. मानव मूल्य का शिक्षा में योगदान ३३
वी. एन. वी. पद्मावती

४. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में शाश्वत जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा ३७
डॉ० अम्बिली. वी. एस

५. भारतीय संस्कृति और साहित्य में अन्तर्निहित मावन मूल्य एवं लोक कल्याण ४१
डॉ० ओकेन्द्र, डॉ० रानी बापू लोखण्डे

६. आधुनिक तेलुगु कहानी-साहित्य में मानव मूल्य : अनिशेट्टि श्रीधर के विशेष संदर्भ में १२१
डॉ० दण्डिभोट्ला नागेश्वर राव

७. संगम साहित्य में 'अरम' ('नैतिकता') और 'नालडियार' १३०
डॉ० आर. रमेश कुमार

८. वृद्ध विमर्श के संदर्भ में मानव जीवन मूल्य १४०
पुष्पा सी. वी.

९. तिरूक्कुरल में जीवन मूल्य १५१
डॉ० एन. सेल्वराज

१०. मीडिया और नैतिक मूल्य १५६
लिबिल जैक्कब

११. बदलते मूल्य एवं वृद्धों की स्थिति : 'गिलिगडु' के संदर्भ में १६३
डॉ. लेखा एम., मनुजा के मणि

१२. मानवीय मूल्यों का समाज मनोवैज्ञानिक संदर्भ १६८
डॉ० राजेश, डॉ० आशा कुमारी

१३. आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों का दायित्वबोध और मानव मूल्य १७४
डॉ० पल्लवी सिंह 'अनुमेहा'

STN

Head of the Dept. of ...
N.S.S. College, Pandalam

N.S.S. COLLEGE PANDALAM

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:40 +05'30'
Sanal Kumar M G

४

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में शाश्वत जीवन मूल्यों की प्रतिष्ठा

—डॉ. अम्बिली. वी. एस

सारांश : भारतीय संस्कृति शाश्वत जीवन मूल्यों पर आधारित है। दया, प्रेम, नम्रता, अहिंसा, सत्य, त्याग, समर्पण, क्षमा, सेवा, उदारता, परोपकार, शान्ति आदि शाश्वत मूल्यों से मानव का कल्याण होता है। ये मूल्य मनुष्य को शुद्ध आचरण समेत सही दिशा की ओर आगे बढाते हैं। इस प्रकार मानवीय संबंधों को सुदृढ़ बनाने में इन जीवन मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। साहित्य एवं जीवन मूल्यों का अटूट सम्बन्ध है। साहित्यकार अपनी रचनाओं के जरिए समाज की भलाई केलिए उदात्त विचारों एवं मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है। स्वतंत्रता पूर्व युगीन आधुनिक कवियों की रचनाएँ इसके उत्तम द्रष्टान्त है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी की कविताएँ शाश्वत जीवन मूल्यों से संपन्न हैं और आदर्श जीवन की स्थापना केलिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरित भी करती हैं।

मानव समाज की बुनियाद उदात्त जीवन मूल्यों पर ही टिकी हुई है। साहित्य में इन उदात्त विचारों का विवेचन होता है। अतः "साहित्य के मूल्य जीवन के मूल्यों के विरोधी नहीं हो सकते। भारतीय बुद्धिवादी जीवन मूल्यों को साहित्य की सर्वोच्च कसौटी मानते हैं।"[1] जीवन मूल्य को असल में जीवन धर्म का पर्याय मान सकते हैं। ये मूल्य धर्म, दर्शन, कला, साहित्य जैसे मानवीय उपलब्धियों के विविध रूपों में व्यवहृत होते हैं।

जीवन मूल्यों की सच्ची अभिव्यक्ति की दृष्टि से द्विवेदी युगीन साहित्य बेजोड़ है स तत्युगीन काव्य के सम्बन्ध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने यों कहा है, "देश–दशा, समाज–दशा,स्वदेश प्रेम, आचरण

सहायक आचार्या, एन.एस.एस.महाविद्यालय, पन्दलम, पत्तनमतिट्टा, केरल

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam
PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam
Scanned with CamScanner
Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:40 +05'30'
Sanal Kumar M G
Scanned with CamScanner

सम्बन्धी उपदेश आदि ही तक नयी धारा की कविता न रहकर जीवन के कुछ और पक्षों की ओर भी बढ़ी। त्याग, वीरता, उदारता, सहिष्णुता इत्यादि के अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक प्रसंग पद्यबद्ध हुए, जिनके बीच–बीच में जन्मभूमि–प्रेम,स्वजाति–गौरव,आत्म सम्मान की व्यंजना करनेवाले जोशीले भाषण रखे गए।"[2] विवेच्य युगीन कवियों ने सत्य और न्याय की मांग की। समाज में नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा बढ़ी स शाश्वत मूल्यों और जीवन के प्रमुख उद्देश्यों की पुनःस्थापना हुई जो रीतिकाल में नष्ट हो गयी थी स काव्य सृजन के क्षेत्र में एक नया मानवीय दृष्टिकोण रूपायित हुआ। इस दृष्टि से बाबू मैथिलीशरण गुप्त अग्रज सिद्ध हुए।

मैथिलीशरण गुप्त जी द्विवेदी कालीन सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। ये राष्ट्र कवि के रूप में भारतीय संसद के सदस्य भी रहे हैं। इनके बारे में श्री द्वारिका प्रसाद मिश्र का महत्वपूर्ण कथन इस प्रकार है, "गुप्तजी भारतीय संस्कृति और भारतीय राष्ट्रीय जीवन के एक प्रधान गायक रहे हैं। उनकी कविता ने हिंदी की आगामी काव्य विकास को नयी गति प्रदान की है।"[3] गुप्तजी की काव्य परम्परा विविध एवं विस्तृत है, जिसमें भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, राष्ट्र प्रेम, एकता और आधुनिक जैसे विभिन्न आयामों का सुरुचिपूर्ण सामंजस्य है।

राष्ट्र कवि का ऐतिहासिक खंडकाव्य 'रंग में भंग' एक आदर्शवादी रचना है। इसमें नैतिक मूल्यों की प्रबल वकालत हुई है स नारी की निष्ठा एवं त्याग पर कवि के विचार यूँ हैं– "आर्य कन्या मान लेती स्वप्न में भी पति जिसे, भिन्न उससे फिर जगत में और भज सकती किसे।"[4]

मातृभूमि की सम्मान रक्षा का मार्मिक प्रसंग का विधान भी इस कृति में हुआ हैं। सद्गुणों को बढ़ावा देना ही गुप्तजी का उद्देश्य है। **'जयद्रथ वध'** में भी कवि ने न्याय, सत्य, शील और आदर्श की स्थापना की है। इस काव्य में अभिमन्यु के चरित्र द्वारा वीर पूजा की निर्विकल्प भावना निहित है। कवि ने अभिमन्यु को वीरता, त्याग, बलिदान, दृढ़ता एवं संयम के प्रतीक के रूप में खड़ा किया है और कहा है कि–

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:40 +05'30'
Sanal Kumar M G
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

"माता–पितानुराग प्रगट तेरा यह तन है
मूर्तिमान सौभाग्य पुत्र तू अद्भुत धन है।"[5]

गुप्तजी ने सत्य और न्याय की मांग करके गरीब, किसान, मजदूर, विधवा एवं अछूत को काव्य की विषय वस्तु बनायी स उनकी रचनाओं में नारी के महनीय रूप दृष्टिगोचर होते हैं। कैकेयी, उर्मिला, सीता और यशोधरा का जो सामाजिक मूल्य गुप्तजी ने दर्शाया वह अद्वितीय है। उन्होंने 'साकेत' के माध्यम से मनुष्य में ईश्वर का दर्शन कराया स 'साकेत' के राम ऐसा कहते हैं–

"भव में नव वैभव प्राप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया,
सन्देश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।"[6]

'भारत भारती', 'किसान', 'जयद्रथ वध' आदि काव्यों में करुण रस की मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है। मानवतावाद, बुद्धिवाद और राष्ट्रीयता की सफल अवतारणा गुप्त जी के काव्यों में हुई है। परोपकार एवं सेवा धर्म की प्रबल भावना 'साकेत' इन पंक्तियों में देख सकते हैं–

"मैं आया उनके हेतु कि जो तपित है ,
जो विकल,विवश,बल हीन,दीन शापित हैं।"[7]

'नर हो न निराश करो मन को' कविता में मैथिलीशरण गुप्तजी ने कर्तव्य पालन,दायित्व निर्वहन तथा मानव धर्म का अनुपालन करने का आह्वान किया है। कवि का कहना है कि मनुष्य को अपने मन को निराश किए बिना कुछ न कुछ काम करना चाहिए।

"संभलो कि सुयोग न जाय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN, o=Personal, email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:40 +05'30'
Sanal Kumar M G

अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो न निराश करो मन को"[8]

अतः प्रत्येक मानव को अपने कर्म का पालन करते हुए निज जन्म को सार्थक बनाना चाहिए। हमें कभी भी अपने जीवन को व्यर्थ नही छोड़ना चाहिए बल्कि खुद को सदा उपयुक्त कर्म में लगाना चाहिए स क्योकि सदुपाय कभी भी निरर्थक नही होगा। मनुष्य को अपना कर्म करके यश–कीर्ति बढ़ाना चाहिए तथा जग में अपना नाम रोशन करना चाहिए। व्यक्ति को अपना मार्ग खुद ही चुनना और प्रशस्त करना चाहिए। अर्थात् ईश्वर में आस्था और विश्वास रख कर अपना कर्तव्य पालन करना ही सच्चा मानव धर्म है।

इस प्रकार मानवता की सेवा, उदात्त चरित्रों की सृष्टि, आदर्श जीवन के साथ मनुष्य की चरितार्थता, सहजीवी से सहानुभूति, नैतिक मूल्यों की स्थापना, उपेक्षित नारि को महिमामय स्थान दिलाने का सद्प्रयास आदि राष्ट्रकवि की रचनाओं को कालजयी बनाते हैं।

अतः गुप्त जी के व्यापक, विस्तृत एवं उदात्त काव्य सृजन की राष्ट्रीय चेतना एवं मानवीय मूल्यों का प्रभाव और उसकी अमिट ज्योति सदा प्रशोभित रहेगी।

सन्दर्भ संकेत :

१. डॉ.भारती शेलके, महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य, पृ.23
२. डॉ.नगेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ.623
३. पं.द्वारिकाप्रसाद मिश्र,मैथिलीशरण गुप्त व्यक्ति और काव्य . प्राक्कथन
४. मैथिलीशरण गुप्त,रंग में भंग, पृ.13
५. मैथिलीशरण गुप्त,जयद्रथ वध, पृ.80
६. मैथिलीशरण गुप्त,साकेत,पृ.234–235
७. वही
८. मैथिलीशरण गुप्त, नर हो न निराश करो मन को

Head of the Dept. of Hindi
N.S.S. College, Pandalam

N.S.S. COLLEGE PANDALAM

PRINCIPAL
N.S.S. College, Pandalam

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Digitally signed by Sanal Kumar M G
DN: cn=Sanal Kumar M G, c=IN,
o=Personal,
email=mgsanalkumar@gmail.com
Date: 2024.09.08 21:04:40 +05'30'

Sanal Kumar M G